1061CH08

## सप्तमः पाठः

# विचित्रः साक्षी

अयं पाठः ओम्प्रकाशठक्कुरविरचितायाः कथायाः सम्पादितः अंशः अस्ति। इयं कथा बङ्गसाहित्यकार– बंकिमचन्द्रचटर्जीद्वारा न्यायाधीशरूपेण प्रदत्तनिर्णयोपरि आधारिता अस्ति। न्यायकर्तारः सत्यासत्यनिर्णयार्थं यदा–कदा तादृशीनां युक्तीनां प्रयोगं कुर्वन्ति याभिः प्रमाणं विनापि न्यायः स्यात्। अस्यां कथायामपि न्यायाधीशेन तथैव मार्गः आचरितः।

**कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।**

**पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। 'निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा', एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्त्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।**

**विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च, परं तदानीमेव किञ्चिद् विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत ''चौरोऽयं चौरोऽयम्'' इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।**

© NCERT not to be republished

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चित् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्।

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच-'रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान्- मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं चोरितायाः मञ्जूषायाः

**ग्रहणाद् वारितः, अतः निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति।**

**न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्।**

**अत एवोच्यते – दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।**
**नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते॥**

## शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| **भूरि** | – पर्याप्तम् | – अत्यधिक | – Plenty |
| **उपार्जितवान्** | – अर्जितवान् | – कमाया | – Earned |
| **निवसन्** | – वासं कुर्वन् | – रहते हुए | – While residing |
| **प्रसृते** | – विस्तृते | – फैले हुए | – Spreaded |
| **विजने प्रदेशे** | – एकान्तप्रदेशे | – एकान्त प्रदेश में | – In a desolate place |
| **शुभावहा** | – कल्याणप्रदा | – कल्याणकारी | – Charitable |
| **गृही** | – गृहस्वामी | – गृहस्थ | – House holder |
| **दैवगतिः** | – भाग्यस्थितिः | – भाग्य की लीला | – Destiny |
| **पलायितः** | – वेगेन निर्गतः/पलायनमकरोत् | – भाग गया, चला गया | – Ran away |
| **प्रबुद्धः** | – जागृतः | – जागा हुआ | – Awakened |
| **त्वरितम्** | – शीघ्रम् | – शीघ्रगामी | – Swift |
| **प्रस्थितः** | – गतः | – चला गया | – Went |
| **अर्थकार्श्येन** | – धनस्य अभावेन | – धनाभाव के कारण | – Scarcity of money |
| **पदातिरेव** | – पादाभ्याम् एव | – पैदल ही | – On foot |
| **पुंसः** | – पुरुषस्य | – मनुष्य का | – Human's |
| **निहिताम्** | – स्थापिताम् | – रखी हुई | – Placed/kept |
| **अन्वधावत्** | – अन्वगच्छत् | – पीछे-पीछे गया | – He/she followed |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| **क्रोशितुम्** | – चीत्कर्तुम् | – ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने | – Shouting |
| **तारस्वरेण** | – उच्चस्वरेण | – ऊँची आवाज़ में | – Loudly |
| **अभर्त्सयन्** | – भर्त्सनाम् अकुर्वन् | – भला-बुरा कहा | – They criticized |
| **प्रख्याप्य** | – स्थाप्य | – स्थापित करके | – Establishing |
| **चौर्याभियोगे** | – चौरकर्मणि, चौर्यदोषारोपे | – चोरी के आरोप में | – On an allegation of stealing |
| **नीतवान्** | – अनयत् | – ले गया | – (He) took |
| **अवगत्य** | – ज्ञात्वा | – जानकर | – Knowing |
| **दोषभाजनम्** | – दोषपात्रम् | – दोषी | – Culprit |
| **उपस्थातुम्** | – समक्षमायातुम् | – उपस्थित होने के लिए | – To be presented |
| **आरक्षिणम्** | – सैनिकम् (रक्षक पुरुष) | – सैनिक को | – To guard |
| **आदिष्टवान्** | – आज्ञां दत्तवान् | – आज्ञा दी | – (He) ordered |
| **स्थापितवन्तौ** | – न्यस्तवन्तौ | – रखा | – Kept |
| **तत्रत्यः** | – तत्र भवः | – वहाँ का | – Of that place |
| **न्यवेदयत** | – प्रार्थयत | – प्रार्थना की | – (He/she) requested |
| **क्रोशद्वयान्तराले** | – द्वयोः क्रोशयोः मध्ये | – दो कोस के मध्य | – At the distance of around two miles |
| **आदिश्यताम्** | – आदेशः दीयताम् | – आज्ञा दीजिए | – Order |
| **उपेत्य** | – समीपं गत्वा | – पास जाकर | – Going near |
| **काष्ठपटले** | – काष्ठस्य पटले | – लकड़ी के तख्ते पर | – On a wooden board |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **निहितम्** | – स्थापितम् | – रखा गया | – Kept |
| **पटाच्छादितम्** | – वस्त्रेणावृतम् | – कपड़े से ढका हुआ | – Covered by cloth |
| **वहन्तौ** | – धारयन्तौ | – धारण करते हुए, वहन करते हुए | – Carrying |
| **कृशकायः** | – दुर्बलं शरीरम् | – कमज़ोर शरीरवाला | – Lean body |
| **भारवतः** | – भारवाहिनः | – भारवाही | – Of heavy built |
| **भारवेदनया** | – भारपीडया | – भार की पीड़ा से | – By the pain of the load |
| **क्रन्दनम्** | – रोदनम् | – रोने को | – Weeping |
| **निशम्य** | – श्रुत्वा, आकर्ण्य | – सुन करके | – Listening |
| **मुदितः** | – प्रसन्नः | – प्रसन्न | – Happy |
| **भुङ्क्ष्व** | – भोगं कुरु | – भोगो | – Meet the nemesis |
| **चत्वरे** | – शृङ्गाटके/चतुष्पथे | – चौराहे पर | – At square |
| **लप्स्यसे** | – प्राप्स्यसे | – प्राप्त करोगे | – You will get |
| **प्रावारकम्** | – आच्छादनवस्त्रम् | – ऊपर ओढ़ा हुआ वस्त्र | – Covering cloth |
| **अपसार्य** | – अपवार्य | – दूर करके | – Removing |
| **अभिवाद्य** | – अभिवादनं कृत्वा | – अभिवादन करके | – Saluting |
| **अध्वनि** | – मार्गे | – रास्ते में | – On the way |
| **यदुक्तम्** | – यत् कथितम् | – जो कहा गया | – Whatever was said |
| **वारितः** | – निवारितः | – रोका गया | – Stopped |
| **मुक्तवान्** | – अत्यजत् | – छोड़ दिया | – Released |
| **समालम्ब्य** | – आश्रयं गृहीत्वा | – सहारा लेकर | – Taking recourse |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| **लीलयैव** | – अनायासम् एव | – खेल-खेल में | – In a flash |
| **आदिश्य** | – आदेशं दत्त्वा | – आदेश देकर | – Ordering |

## अभ्यासः

**1. एकपदेन उत्तरं लिखत–**

(क) कीदृशे प्रदेशे पदयात्रा न सुखावहा?

(ख) अतिथिः केन प्रबुद्धः?

(ग) कृशकायः कः आसीत्?

(घ) न्यायाधीशः कस्मै कारागारदण्डम् आदिष्टवान्?

(ङ) कं निकषा मृतशरीरम् आसीत्?

**2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

(क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?

(ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?

(ग) प्रसृते निशान्धकारे स किम् अचिन्तयत्?

(घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?

(ङ) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी किमुक्तवान्?

(च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

**3. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) पुत्रं द्रष्टुं सः प्रस्थितः।

(ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

(ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।

(घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।

(ङ) स भारवेदनया क्रन्दति स्म।

(च) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

© NCERT not to be republished

**4. यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'आदेशं प्राप्य उभौ अचलताम्' अत्र किं कर्तृपदम्?

(ख) 'एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तत् वर्णयामि'–अत्र 'मार्गे' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्'– अत्र 'तस्मै' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्' अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?

(ङ) 'दुष्कराण्यपि कर्माणि'– अत्र विशेष्यपदं किम्?

**5. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत–**

(क) पदातिरेव – ...................... + ......................

(ख) निशान्धकारे – ...................... + ......................

(ग) अभि + आगतम् – ..................................................

(घ) भोजन + अन्ते – ..................................................

(ङ) चौरोऽयम् – ...................... + ......................

(च) गृह + अभ्यन्तरे – ..................................................

(छ) लीलयैव – ...................... + ......................

(ज) यदुक्तम् – ...................... + ......................

(झ) प्रबुद्धः + अतिथिः – ..................................................

**6. अधोलिखितानि पदानि भिन्न-भिन्नप्रत्ययान्तानि सन्ति। तानि पृथक् कृत्वा निर्दिष्टानां प्रत्ययानामधः लिखत–**

परिश्रम्य, उपार्जितवान्, दापयितुम्, प्रस्थितः, द्रष्टुम्, विहाय, पृष्टवान्, प्रविष्टः, आदाय, क्रोशितुम्, नियुक्तः, नीतवान्, निर्णेतुम्, आदिष्टवान्, समागत्य, मुदितः।

| **ल्यप्** | **क्त** | **क्तवतु** | **तुमुन्** |
|---|---|---|---|
| .................. | .................. | .................. | .................. |
| .................. | .................. | .................. | .................. |
| .................. | .................. | .................. | .................. |

© NCERT not to be republished

**7. (अ) अधोलिखितानि वाक्यानि बहुवचने परिवर्तयत–**

(क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्।

(ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।

(ग) कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः।

(घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तौ।

**(आ) कोष्ठकेषु दत्तेषु पदेषु यथानिर्दिष्टां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) सः ................ निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृहशब्दे पंचमी)

(ख) गृहस्थः ................ आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथिशब्दे चतुर्थी)

(ग) तौ ................ प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधिकारिन् शब्दे द्वितीया)

(घ) ................ चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे। (इदम् शब्दे सप्तमी)

(ङ) चौरस्य ................ प्रबुद्धः अतिथिः। (पादध्वनिशब्दे तृतीया)

## योग्यताविस्तारः

यह पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश-रूप में दिये गये फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है।

**(क) विचित्रः साक्षी**

न्यायो भवति प्रमाणाधीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुं न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपि न्यायाधीशाः यस्मिन् कस्मिन्नपि विषये प्रमाणाभावे निर्णयं विधातुं न समर्थाः भवन्ति। अत एव, अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणम्) विना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेद्युः यदा स शवः न्यायाधीशं सर्वं सप्रमाणं निवेदितवान् तदा सः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयमेव सन्देशः।

**(ख) मतिवैभवशालिनः**

बुद्धिसम्पत्तिसम्पन्नाः। ये विद्वांसः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्ताः ते मतिवैभवशालिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्यबलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति।

© NCERT not to be republished

**(ग) स शवः**

न्यायाधीश बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे कश्चित् प्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्तुं नियोजितः। यद् घटितमासीत् सः सर्वं सत्यं ज्ञात्वा साक्ष्यं प्रस्तुतवान्। पाठेऽस्मिन् शवः एव 'विचित्रः साक्षी' अस्ति।

## भाषिकविस्तारः

**उपार्जितवान्** – **उप + √ अर्ज् + तवतु**

**दापयितुम्** – **√दा + णिच् + तुमुन्**

**अदस् (यह) पुँल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द**

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | असौ | अमू | अमी |
| द्वितीया | अमुम् | अमू | अमून् |
| तृतीया | अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः |
| चतुर्थी | अमुष्मै | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| पंचमी | अमुष्मात् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| षष्ठी | अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् |
| सप्तमी | अमुष्मिन् | अमुयोः | अमीषु |

**अध्वन् (मार्ग) नकारान्त पुँल्लिङ्ग**

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | अध्वा | अध्वानौ | अध्वानः |
| द्वितीया | अध्वानम् | अध्वानौ | अध्वनः |
| तृतीया | अध्वना | अध्वभ्याम् | अध्वभिः |
| चतुर्थी | अध्वने | अध्वभ्याम् | अध्वभ्यः |
| पंचमी | अध्वनः | अध्वभ्याम् | अध्वभ्यः |
| षष्ठी | अध्वनः | अध्वनोः | अध्वनाम् |
| सप्तमी | अध्वनि | अध्वनोः | अध्वसु |
| सम्बोधन | हे अध्वन्! | हे अध्वानौ! | हे अध्वनः! |

© NCERT not to be republished